BC-2021-22

दलित चेतना के स्वर

डॉ० घनश्याम भारती
डॉ० ओकेन्द्र, डॉ० राकेश सिंह रावत

Nutan Mahavidyalaya
Parbhani

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU

दलित चेतना के स्वर

सम्पादक
डॉ० घनश्याम भारती
डॉ० ओकेन्द्र
डॉ० राकेश सिंह रावत

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स
वी-508, गली नं.17, विजय पार्क,
दिल्ली-110053
मो. 08527460252, 09990236819
ईमेल: jtspublications@gmail.com

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU, Dist. Parbhani

Scanned with OKEN Scanner

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली

दलित चेतना के स्वर

सम्पादक

डॉ० घनश्याम भारती, डॉ० ओकेन्द्र, डॉ० राकेश सिंह रावत

पीयर रिव्यू टीम

डॉ० दीपक पाण्डेय, सहायक निदेशक, शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली
आचार्य पं० पृथ्वीनाथ पाण्डेय, भाषाविद्-समीक्षक-मीडिया अध्ययन-विशेषज्ञ, प्रयागराज
डॉ० डी० आर० राहुल, प्राचार्य, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दतिया, मध्यप्रदेश
डॉ० शिव प्रसाद शुक्ल, प्रोफेसर हिंदी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन- फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक/ संपादक/ प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित शोध-पत्रों में निहित विचार तथा संदर्भों का संपूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है। संपादक/ प्रकाशक इसके लिए उत्तरदायी नहीं है।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : २०२२
ISBN 978-93-5627-066-4

प्रकाशक

जे०टी०एस० पब्लिकेशन्स

वी-५०८, गली नं०१७, विजय पार्क, दिल्ली-११००५३

दूरभाष : ०८५२७ ४६०२५२, ०११-२२६११२२३

E-Mail : jtspublications@gmail.com

मूल्य : ६६५.०० रूपये

आवरण : प्रतिभा शर्मा, दिल्ली

मुद्रक : तरूण ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

Dalit Chetna ke Swar Edited by
Dr. Ghanshyam Bharti, Dr. Okendra, Dr. Rakesh Singh Rawat

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU

अनुक्रमणिका

प्राक्कथन : डॉ० घनश्याम भारती, डॉ० ओकेन्द्र, डॉ० राकेश सिंह रावत ५
भूमिका : डॉ० सुशीला टाकभौरे ११

१. रांगेय राघव के उपन्यासों में दलित-स्त्री के स्वर १६
डॉ० घनश्याम भारती
२. हिंदी दलित साहित्य में दलित चेतना और संवेदना के स्वर २७
डॉ० ओकेन्द, डॉ० (सुश्री) राणी बापू लोखंडे
३. दलित चेतना और संवेदना के स्वर ६७
प्रो० डॉ० गरिमा श्रीवास्तव
४. दलित अस्मिता : एक खोज ७३
डॉ० अलका सक्सेना
५. दलित समाज की वर्तमान स्थिति ७८
डॉ० शफायत अहमद
६. समकालीन हिन्दी कविता में दलित चेतना के स्वर ८५
डॉ० यशवन्त यादव
७. सोहनपाल सुमनाक्षर के काव्य में दलित चेतना १०२
डॉ० विशु मेघनानी
८. हिन्दी गजल में दलित चेतना के स्वर १०८
डॉ० जियाउर रहमान जाफरी
९. भारतीय समाज में दलितों की दशा एवं दिशा १२४
राजकुमार पहाडे
१०. हिन्दी दलित साहित्य : 'वीमा' नाटक में दलित-विद्रोह १३२
प्रा० डॉ० बायजा कोटुळे
११. हिंदी साहित्य में दलित चेतना और डॉ० बावासाहेब अम्बेडकर १३८
डॉ० अर्चना चंद्रकांतराव पत्की
१२. दलित समाज-वर्तमान स्थिति १४३
डॉ० बड्ला श्रीनिवास राव
१३. प्रेमचन्द की कहानियों में दलित चेतना १४७
डॉ० संतोष कुमार अहिरवार
१४. दलित साहित्य में दलित चेतना १५५
डॉ० लूनेश कुमार वर्मा
१५. उदय प्रकाश की कहानियों में दलित-विमर्श १६५
प्रा० दिपाली दत्तात्रय तांबे

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU, Dist. Parbhani

Scanned with OKEN Scanner

हिंदी साहित्य में दलित चेतना और डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर

डॉ. अर्चना चंद्रकांतराव पत्की
सहायक प्राध्यापक (हिंदी विभाग)
नूतन महाविद्यालय सेलू जिल्हा परभणी
संलग्नित स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय नांदेड
ई–मेल : patkiac@gmail.com
मोबाइल : 9834213699

'दलित' शब्द का अर्थ है– जिसका दलन और दमन हुआ है, दबाया गया है, उत्पीड़ित, शोषित, सताया हुआ, गिराया हुआ, उपेक्षित, घृणित, वंचित इत्यादि। डॉ. श्योराज सिंह बेचैन दलित शब्द की व्याख्या करते हुए कहते हैं– ''दलित वह है जिसे भारतीय संविधान ने अनुसूचित जाति का दर्जा दिया है।''

भारतीय समाज की संरचना पुरातन परंपरावादी स्वार्थी तत्वोद्वारा सोपानो को आधार मान कर की गई थी जिसमे ऊपरी सीढ़ी पर विराजमान समूह ने नीचे की सीढ़ियों पर स्थित समूह को अपने पैरों तले रखने के लिए अपनी सुविधानुसार विधिविधान का निर्माण किया। नीचे के स्थान पर स्थित व्यक्ति व्दारा उच्च श्रेणी की कल्पना करना पाप माना गया । व्यक्ति जितनी सीढ़ि नीचे होगा उतने उसके अधिकार कम और कर्तव्य अधिक होते जाएंगे।

वास्तव में दलित शब्द का व्यापक अर्थ देता है। भारतीय समाज में जिसे अस्पृश्य माना गया वह व्यक्ति ही दलित है। ग्राम पहाड़ों, वनों में रहने वाली जनजातियाँ, आदिवासी अपराधी कही जाने वाली जातियाँ दलित है। सभी वर्गों की स्त्रियाँ दलित है। स्पष्ट है कि

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU Dist. Parbhani

दलित शब्द उस व्यक्ति के लिए प्रयोग होता है जो समाज–व्यवस्था में सबसे निचली पायदान पर है। वर्ण व्यवस्था ने जिसे अछूत या अन्त्यज माना गया है। इस समूह को ही संविधान में अनुसूचित जातियाँ कहा गया है।

दलित साहित्य की चर्चा सन 1960 के बाद मराठी साहित्य लेखन से हुई। इसका प्रमुख रूप आत्मकथा के द्वारा उभरा 1980–1990 में जब मराठी दलित साहित्य अनुदित होकर हिंदी जगत में पहुंचा तब सही मायनों में दलित जीवन की त्रासदी से पाठक परिचित हुए। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के उपदेश और दलितों के शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात हिंदी प्रदेश के दलितों में अस्मिता जागृत हुई।

हिंदी साहित्य में दलित चेतना की जब हम बात करते है तो केवल दलितों की पिड़ा, वेदना बतलाना, उनपर हो रहे अत्याचारों का वर्णन, करना ही केवल दलित चेतना नहीं है। 'चेतना' का सम्बन्ध दृष्टि से होता है। चेतना का अर्थ है अपनी स्थिति के प्रति जागृत करना। इस अर्थ में सदियों से पिछड़ी जातियों में अपनी अस्मिता जगाना, अस्तित्व का अहसास कराना स्वत्व जगाना 'दलित चेतना' है। दलितों का स्वयं के प्रति उनकी अपनी स्थितियों के प्रति नजरिया बदलना 'दलित चेतना' है।

हिंदी साहित्य के इतिहास में कई दलित रचनाकारों का नाम आता है। भक्तिकाल के कई संत कवि दलित थे किन्तु ये कोई सामाजिक चेतना नहीं दे पाए कि जिससे दलितों में जागृती आए और वे अपनी स्थिति में परिवर्तन लाने के लिए प्रयत्न करे। यह स्थिति लगभग 1960 से 1990 तक बनी रही।

दलित चिन्तक कँवल भारती के अनुसार आधुनिक हिंदी दलित साहित्य वह है जो दलित मुक्ति के सवालों पर पूरी तरह अंबेडकरवादी है, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक सभी क्षेत्रों में उसके सरोकार वे है

PRINCIPAL
...an Mahavidyalaya
...LU. Dist. Parbhani

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU (M.S.)

डॉ. गंगाधर पानतावणे भी इसी तथ्य पर जोर देते है कि दलित साहित्य की प्रेरणा न मार्क्सवाद है, न हिंदूवाद, न नीग्रो साहित्य है. दलित साहित्य की प्रेरणा केवल आंबेडकर वाद है।

डॉ. प्रेमशंकर का मानना है कि डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर ने दलित मुक्ति संघर्ष को नूतन दिशा दी। इससे दलित वर्ग में चाहे ये बौध्द हो या अनुसूचित जाति के हो उनकी सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं ऐतिहासिक गरिमा का विकास हुआ। मराठी दलित साहित्य, हिंदी दलित साहित्य एवं दहेज विहीन सामूहिक विवाह इत्यादि नए विचार दलित वर्ग को प्राप्त हुए। अतः डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर का दलित मुक्ति संघर्ष नितांत व्यावहारिक, अभिव्यक्तिपरक एवं सांस्कृतिक रूप में आज भी प्रभाव डाल रहा है।

डॉ. अंबेडकर को अपने ही हिंदुओं से मिले व्यवहार के कारण जो यातना झेलनी पड़ी उसने उनके मन में इस धर्म के प्रति इतनी घृणा पैदा कर दी की। बाद में उन्हें हिन्दु धर्म ही छोड़ना पड़ गया। अंबेडकर का अनुभव यह रहा कि हिन्दुओं ने दलित कहे जानेवाले अपने सहधर्मियों से अमानवीय व्यवहार ही नहीं किया बल्कि हिंदू धर्मग्रंथों को उसका आधार भी बनाया। उन्होंने अपने विचार पहले तर्क और विज्ञान पर कसने का विवेकपूर्ण कार्य किया उसके बाद निश्चिततापूर्ण निष्कर्ष पर पहुंचकर हो उन्हें सार्वजनिक किया।

दलित चेतना डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर के जीवन दर्शन से मुख्य ऊर्जा ग्रहण करती है। दलित चेतना के प्रमुख बिन्दु है–

- मुक्ति और स्वतंत्रता के सवालो पर डॉ. अंबेडकर के दर्शन को स्वीकार करना।
- बुद्ध का अनीश्वरवाद, आनात्मवाद, वैज्ञानिक दृष्टिबोध, पाखण्ड–कर्मकाण्ड विरोध।
- वर्ण–व्यवस्था विरोध, जातिभेद विरोध, साम्प्रदायिकता विरोध।
- स्वतंत्रता, सामाजिक न्याय की पक्षधरता।
- वर्णविहीन, वर्गविहीन समाज की पक्षधरता।

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU Dist. Parbhani

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU

- ❖ सामन्तवाद, ब्राह्मणवाद का विरोध।
- ❖ आर्थिक क्षेत्र में पूँजिवाद का विरोध ।

डॉ. शरण कुमार लिम्बाले ने 'दलित साहित्य के सौन्दर्यशास्त्र' नामक ग्रंथ में कहा है बाबासाहेब को विषमता का समर्थन करनेवाला साहित्य मान्य नहीं है। केवल मान्य नही है इतनी ही बात नहीं उनका मत है की ऐसे साहित्य के विरुद्ध कृतिशील जनान्दोलन खड़ा होना चाहिए। इसलिए मुझे मनुस्मृति मान्य नही है। इतना कहकर ये रूक नहीं जाते वे उसे 'जलाने की भाषा' बोलते है। उनका मानना है कि साहित्य से समता का संवर्धन और विषमता का विध्वंस होना चाहिए।

अंबेडकर दलितों की स्थिति परिवर्तन पक्षधर थे। हिन्दी मे आज दलित साहित्य चर्चा केन्द्र मे है। 'सरस्वती' प्रकाशित हीरा डोम की कविता भी कई विद्वान पहली हिंदी दलित कविता मानते है। माताप्रसाद, मंशाराम विद्रोही इ. ने भी दलित लेखन किया है। किंतु वास्तव दलित साहित्य के प्रेरणास्त्रोत डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर और उनका दर्शन ही है।

शिक्षित होकर लेखन क्षेत्र उतरे दलित लेखकों के संघर्ष ने हिंदी दलित साहित्य की जो भूमि तैयार की वह आज मजबूत बन चुकी है। सातवें दशक में 'निर्णायक भीम' (सं. आर. कमल, कानपुर) पात्रिका हिंदी दलित लेखको कों जो मंच प्रदान किया उससे कई नाम उभरकर सामने आए। दलित साहित्य की भूमिका मानव केन्द्रित है। डॉ. आंबेडकर ने दलितों में चेतना जगाकर उन्हें मुक्ति संघर्ष से जोड़ा। वर्णव्यवस्था जो उनपर गुलामी के बंधन कसे थे उन्हें तोडने डॉ. आंबेडकर का आंदोलन जहाँ एक और सामाजिक और वैचारिक आन्दोलन या वही वह राजनीतिक आन्दोलन भी था हिंदी का दलित साहित्य उसी संघर्षशील चेतना की अभिव्यक्ति है।

हम कह सकते हैं कि मराठी की तरह हिंदी साहित्य मे 'दलित चेतना' जगाने में डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर और उनके विचारों का योगदान रहा। मध्यकाल भी दलित संत कवियों जातिगत भेदभाव,

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU. Dist. Parbhani

- सामन्तवाद, ब्राह्मणवाद का विरोध।
- आर्थिक क्षेत्र में पूँजिवाद का विरोध ।

डॉ. शरण कुमार लिम्बाले ने 'दलित साहित्य के सौन्दर्यशास्त्र' नामक ग्रंथ मे कहा है बाबासाहेब को विषमता का समर्थन करनेवाला साहित्य मान्य नहीं है। केवल मान्य नही है इतनी ही बात नहीं उनका मत है की ऐसे साहित्य के विरुद्ध कृतिशील जनान्दोलन खड़ा होना चाहिए। इसलिए मुझे मनुस्मृति मान्य नही है। इतना कहकर ये रूक नही जाते वे उसे 'जलाने की भाषा' बोलते है। उनका मानना है कि साहित्य से समता का संवर्धन और विषमता का विध्वंस होना चाहिए।

अंबेडकर दलितों की स्थिति परिवर्तन पक्षधर थे। हिन्दी मे आज दलित साहित्य चर्चा केन्द्र मे है। 'सरस्वती' प्रकाशित हीरा डोम की कविता भी कई विद्वान पहली हिंदी दलित कविता मानते है। माताप्रसाद, मंशाराम विद्रोही इ. ने भी दलित लेखन किया है। किंतु वास्तव दलित साहित्य के प्रेरणास्त्रोत डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर और उनका दर्शन ही है।

शिक्षित होकर लेखन क्षेत्र उतरे दलित लेखकों के संघर्ष ने हिंदी दलित साहित्य की जो भूमि तैयार की वह आज मजबूत बन चुकी है। सातवें दशक में 'निर्णायक भीम' (सं. आर. कमल, कानपुर) पात्रिका हिंदी दलित लेखको कों जो मंच प्रदान किया उससे कई नाम उभरकर सामने आए। दलित साहित्य की भूमिका मानव केन्द्रित है। डॉ. आंबेडकर ने दलितों में चेतना जगाकर उन्हें मुक्ति संघर्ष से जोड़ा। वर्णव्यवस्था जो उनपर गुलामी के बंधन कसे थे उन्हें तोडने डॉ. आंबेडकर का आंदोलन जहाँ एक और सामाजिक और वैचारिक आन्दोलन या वही वह राजनीतिक आन्दोलन भी था हिंदी का दलित साहित्य उसी संघर्षशील चेतना की अभिव्यक्ति है।

हम कह सकते है कि मराठी की तरह हिंदी साहित्य में दलित चेतना जगाने में डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर और उनके विचारों का योगदान रहा। मध्यकाल भी दलित संत कवियों जातिगत भेदभाव

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU. Dist. Parbhani

छुआछूत, वर्णव्यवस्था को लेकर काव्य लिखा लेकिन सही मायनों में उसमे प्रखरता डॉ. आंबेडकर के कारण ही आयी। आंबेडकर का ही योगदान है कि आज डॉ दयानंद वटोही, डॉ. सुशिला टाकभोरे, कुसुम मेघवाल, मोहनदास नैमिशराय, ओमप्रकाश वाल्मीकी, लालचंद राही इ. दलित साहित्यकार उनके कार्य को आगे बढ़ाने का काम रहे हैं। दलित साहित्य ने हजारों साल से मूक बने जनमानस को वाणी दी है। संघर्ष की चेतना उत्पन्न की है। साहित्य को समाज को जोड़ने का काम निरंतर हिंदी साहित्य कर रहा है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :

१. दलित साहित्य के आधारस्तंभ – डॉ. राजपालसिंह रात
२. दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र – ओमप्रकाश वाल्मिकी
३. दलित साहित्य की भूमिका – डॉ. हरपालसिंह 'हरूष'
४. हरीजन से दलित
५. आधुनिकता के आईने में दलित – सं डुबे

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU Dist. Parbhani

Scanned with OKEN Scanner